ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

बालब्रह्मचारी हिराचंद अमोलिककृत

हिंदी सुरस पदें.

प्रकर्ण १ लें, स्तुति.

जिनेंद्रस्तुति, पद १ राग प्रभात.

प्रणमूं जिनराज सदा । चरण कमल तेरे ।
चौ गतिके दुःख हरो । मेरे भव फेरे ॥ प्र० ॥ टे० ॥
रिषभ अजित संभव । अभिनंदन जिनकेरे ।
सुमति पद्म श्रीसुपार्श्व । चंद्राप्रभु मेरे ॥ १ ॥
पुष्पदंत शीतल । श्रेयांस गुण घनेरे ।
वासुपूज्य विमल अनंत । धर्म जग उधेरे ॥ २ ॥
शांति कुंथु अरह मल्लि । मुनिसुव्रत मेरे ।
नमि नेमि पार्श्व वीर । नाथ थिर भयेरे ॥ ३ ॥
और अनागत अतीत । श्रीजिन सब केरे ।
अमुलिक सुत हिराचंद । चरननके चेरे ॥ ४ ॥

जिनेंद्रस्तुति, पद २ राग गझल.

जिनदेवके समान, देव कोइना दुजा । देव कोइना दुजा, जिन० टे०॥
तातैं उर ध्याऊं सिरनाउं गुणगाऊं । बहुरि करूं पूजापूजा ॥ १ ॥
भवसमुद्र खारो अब डुबतहूं तारो । मेरी धरी भुजा भुजा ॥ २ ॥
हिराचंद बोले तुमसे न कोइ तोले । तीन लोककी धुजा धुजा० ॥ ३ ॥

सत्यदेव, पद ३ राग प्रभात.

साचो तो वीतरागदेव । भजो प्राणी ।
और सवै देव तजो । मैला दुख दानी ॥ टे० ॥
क्षुधा तृषा जन्म जरा । मरण नाहिं ज्याके ।
स्वेद खेद इंद्रि विषय । भोग नाहिं वाके ॥ १ ॥
राग दोष मोह शोक । रोग न तनमाहिं ।
चिंता मद विस्मय भय । निद्रादिक नाहिं ॥ २ ॥
ऐसें दोष अष्टादश । रहित सोइ देवा ।
अमुलिक सुत हिराचंद । करत वाकि सेवा ॥ ३ ॥

विचार, पद ४ राग देवध्रुम.

देखो निज मन माहिं विचार । आतम ग्यानी जी ॥ टे० ॥
कहां सुधारस अर विष कहां । होई क्यौं सम दोई ।
त्यौं जिनदेवको और देवकी । उपमा न लगे कोई ॥ १ ॥
कहां कंचन बहुरि लोह कहां । कैसि बराबरि करनी ।
त्यौं जिनमतसें और मतनकी । क्यौकर उपमा धरनी ॥ २ ॥
कहां गजराज और कहां रासभ । क्योंकर सम तोलीजे ।
त्यौं जिनधर्मसे अन्य धर्मकी । उपमा क्यौंकर दीजे ॥ ३ ॥
कहां श्रीखंड फुनि कहां कैरव । क्योंकर सम मन सोहे ।
त्यौं निरग्रंथ सग्रंथ गुरुनकी । कबे न उपमा सोहे ॥ ४ ॥
कहां सुमेरु अर कहां टेकरी । क्यौंकर समान होई ।
त्यौं मूल संघसे और संघकी । नलगे उपमा कोई ॥ ५ ॥
पंच रतन ये सार जगतमें । झूट डारके देना ।
अमुलिकनंद हिराचंद कहै । साच परखके लेना ॥ ६ ॥

आदिनाथस्तुति, पद ५ गजल.

भगवान आदिनाथ जिनसे, मन मेरा लगा ।
आराम मुझे होत, दुःख दर्शसे भगा ॥ टे० ॥
मरुदेविनंद धर्मकंद, कुलमे सुर उगा ।
नृप नाभिराजके कुमार, नमत सुर खगा ॥ १ ॥
जुगला धर्म निवारिके, जंजालको तगा ।
वसु करमकू जराय, शिव पंथमें पगा ॥ २ ॥
अव तो करो सिताब, मेहरवानि दिललगा ।
कहे दास हिरालाल, दिज्यो मुक्ति कामगा ॥ ३ ॥

पद ६ राग भैरवी.

आदिजिनेश्वर साहेव मेरा । ध्यान धरूं नितप्रति मैं तेरा ॥ टे० ॥
कौशल देश अयोध्या नगरी । सुर पुर सम परताप घनेरा ।
नाभिराय मरुदेवी जाया । मानू सुर उदयाचल केरा ॥ १ ॥
हेम वरन तन धनुप पांचसे । उत्तमकुल इक्ष्वाक वडेरा ।
जुगला धरम निवारण स्वामी । वृपभचिन्ह पदपद्म भलेरा ॥ २ ॥
वीस लाख पूरव वालपणेमें । खेले खेल कुमार वसेरा ।
त्रेसठ लाख पूरव राज कियो । एक लाख पूरव तप केरा ॥ ३ ॥
अष्टापद पर शिवपद पायो । नष्ट करी करमाष्टक घेरा ।
अमुलिकसुत हिराचंद कहै । जनम जनम चरननका चेरा ॥ ४ ॥

पद ७ राग कालंगडा.

रिपभजी आदिजिनेंद्र, थारी छवि न्यारी ॥ रि० ॥ टेक ॥
नाभिराय मरुदेविके नंदन, मोहलई शिवनारी ॥ १ ॥
सोहनि सूरत मोहिनि मूरत, सुरज लजावन हारी ॥ २ ॥
अमुलिकनंद हिराचंद कहतहै, भवभवमे सुखकारी ॥ ३ ॥

महावीरस्तुति, पद ८ ठुमरी.

बगियामें राजन बगियामे साजन। महावीर आये मेरे मन भायेजी।टे।
कालविना षटरितु फुली है। फल वा फुलन करि तरु उमगायेजी
सिंघ गजादिक गाई वघेरा। हंस बिली अहि नोल कहायेजी ॥ २॥
वैर छांडि इकठे सब बैठे। अचरज देखि मैं तुमकु बधायेजी ॥३॥
धन्य घडी दिन भाग तुह्मारो। पुण्य उदैसे प्रभु तुम पायेजी ॥४॥
कहत हिराचंद मालि वचन सुनि। आनंद श्रेणिक उर न समायेजी५

पद ९ पंझाप.

चलो चलो जिन वंदनको। विपुलाचल आय विराजत है ॥टे०॥
कहां कहूं सुंदरता जाकी। कोट चंद सुर लाजत है ॥ १ ॥
अंधा देखत गुंगा बोलत। पंगु चलत छवि छाजत है ॥ २ ॥
कहत हिराचंद ऐसे प्रभुके। दर्शनते अघ भाजत है ॥ ३ ॥

पद १० राग सोरठा.

गावत जिन गुण गंभीर। सुर नर सुखकारी रे ॥ गा० ॥ टे० ॥
प्रगट्यो केवल सुग्यान। समवसरण धनआन।
रचत भयो तिनहि थान। हरख हिय धारी रे ॥ १ ॥
सिंघासन मणिविचित्र। प्रातिहार्य सहितचित्र।
अंतरिक्ष जिन पवित्र। बैठे अघहारी रे ॥ २ ॥
वाणी झरत जिन उदार। सकलअर्थसहितसार।
सुनत हरत भवविकार। सब जन हितकारी रे ॥ ३ ॥
बजतहै मृदंग चंग। बासरि अर बिन उत्तंग।
लोक सुनत होत दंग। नाचत नर नारी रे ॥ ४ ॥
नावत कर जोरि भाल। अमुलिकसुत हिरालाल।
द्यो निज संपत कृपाल। अरज यह हमारी रे ॥ ५ ॥

पंचकल्याणक, पद ११ चाल वधाईकी.

बलहारी तुह्मारी प्यारी रे । सुखकारी रे बलहारी ।
सब देवनके देव जिनेश्वर । कोटकाम छवि वारी रे ॥ टे० ॥
सुरग लोकते चयकर जब तुम मात गरभमे आये ।
इंद्रादिक सुर नर विद्याधर । रोमरोम हरखाये ॥
पट नौ मास रतन नगरीमें । तीन काल बरखाये ।
सेवत छप्पन कुमारी रे । बलहारी तुम्हारी प्या० ॥ १ ॥
मतिश्रुति अवधि पुनि दश अतिशय सहित जन्म तुम लीनो ।
ऐरावत चढ मेर शिखरपर । थापि न्हवन हरि कीनो ॥
करि शृंगार मातकौ सोंपी । भक्ति विखे चित दीनो ॥
नाचत राचत भारी रे । बलहारी तुह्मारी प्यारी रे ॥ २ ॥
भव तन भोग विरक्त भये । अनुप्रेक्षा चित्त चितारी ।
लोकांतिक सुर आय प्रशंसे । तुमने भली विचारी ॥
पंच महाव्रत मंडित दीक्षा । परम दिगंबर धारी ।
राज काज सब छारी रे । बलहारी तुह्मारी प्या० ॥ ३ ॥
घातिकरम हरि केवल पायो । लोकालोक निहोरे ।
समवसरण धनपती रचो । पूजनको सर्व पधारे ॥
आजरखंड विहार करी । बहुजनको पार उतारे ।
दुविधधर्म विसतारी रे । बलहारी तुह्मारी प्यारी रे ॥ ४ ॥
और अघाति चारकरम । तिनको तुमने जब भाजे ।
तीन लोकके शीखर ऊपर । आपु जाय विराजे ॥
निराकार अविकार निरंजन । अजरामर पद साजे ।
आवागमन निवारी रे । बलहारी तुम्हारी प्या० ॥ ५ ॥

चार ज्ञानके धारक गणधर । तिनहूं पार न पावे ।
इंद्र चंद्र धरनेंद्र मुनीश्वर । चरनारविंद तुम ध्यावे ॥
अमुलिकनंद मतिमंद हिराचंद । कहालग गावे ।
तारतार भव वारी रे । वलहारी तुम्हारी प्या० ॥ ६ ॥

पद १२ दादरा.

तोरेविन मेरा न कोई । जिनराज रे तोरे० ॥ टे० ॥
मातपिता तूहि तात तूहि । तूहि वडा भ्राता ।
तासु वहु प्रेम महाराज रे । तोरे विन मेरा० ॥ १ ॥
तूहि परमेश जगदीश । ईश तूहि ।
सव देवनके सिरताज रे । तोरे विन मेरा० ॥ २ ॥
जो तू मोक्षसुख अव । देत नही मोको ।
कहां जाय जाचु किसे आज रे । तोरे विन मेरा० ॥ ३ ॥
अमुलिकनंद हिराचंद । नित तोकू ।
अरज करत निजकाज रे । तोरे विन मेरा० ॥ ४ ॥

वासुपूज्यस्तुति, पद १३ ठुमरी.

वसुपूज्यनंदन वा तीरथपती । वसुपूज्यनंदन वा ती० ॥टे०॥
चंपापुरी भयो जयावति जायो । वासुपूज्यजिन मोहनिकंद वा ।
रक्तवर्ण तनु उंची सत्तर धनु । वहत्तर लक्ष वर्षायु ।
महिष लंछन वा तीरथपती । वसुपूज्यनंदन वा ॥ २ ॥
दीक्षा जिन धरी तप अति करी । वसुविधि करमको ।
किया खंडन वा तीरथपती । वसुपूज्यनंदन वा ॥ ३ ॥
चंपापुरि परी मुगति वधुवरी । अमुलिकसुत कहे ।
आयो वंदनवा तीरथपती । वसुपूज्यनंदन वा० ॥ ४ ॥

विनंती, पद १४ राग देवध्रुम.

मेरी अरज सुणो महाराज । हो जिन राजाजी ॥ टे० ॥
मैं दुखी अनादि कालसे । सो दुख चितमे धारो ।
भटक्यो नर्क निगोदन माहि । सो प्रभु दुःख निवारो ॥ १ ॥
दो निगोदगत सात सात लख । वेर अनंतहि जामें ।
एक सासमें जामन मरणहि । भये अठारह वामे ॥ २ ॥
काय पृथवि अप तेज वायु चहु । सातसात लख पाई ।
दशलख वनसपती कायनकी । जोनि लही दुखदाई ॥ ३ ॥
बेइंद्री तेंद्री चौइंद्रीय । दोदो लख दुख पायो ।
फेर तिरजंच योनि लखचारी । क्षुधा तृषादि लह्यायो ॥ ४ ॥
सहे नरक लख चार जोन दुख । छेदन भेदन जानो ।
देव भयो लखचार जोनमे । रंभारूप लुभानो ॥ ५ ॥
मनुप जनम चौदह लख भटको । तुमसे ऑवद पायो ।
अब निज पद द्यो हिराचंदको । चौऱ्यासी लख गायो ॥ ६ ॥

पद १५.

हमसे उधरणा राज । तुम करुणाके निधि साचे ॥ टे० ॥
विधनाके वशि निशदिन भटकायो । चवऱ्यासीलख सिर पिर पायो ।
शरणागत जिन आयो । टारणा ये टारना राज ॥
तुम करुनाके निधि साचे ॥ हमसे० ॥ १ ॥
दुखियाके झटपट दुख तुम भाने । अपना सम करि शिवपुर ठाने ।
तारणतरण कहाने । हरण भवहरणा राज ॥ तुम० ॥ २ ॥
रसना जो दशशत करि हरि गावे । तुमरे गुनको अंत न आवे ।
हिराचंद क्या पावे । तारणा हो तारणा राज ॥ तुम० हमसे ॥ ३ ॥

तारणतरण, पद १६.

तारणतरण जिहाज । स्वामी महाराज ॥ ता० ॥ टेक ॥
अन्यदेव मैं बहुतहि सेये । सरियो एक न काज ॥ १ ॥
अब मैं प्रभु तुम भेद पिछानो । भवभत्र और न काज ॥ २ ॥
सीस नवाय मै तोकु पुकारत । सुनिये प्रगट अवाज ॥ ३ ॥
सुगुनमणी ये हिराचंदके । शरणगहेकी लाज ॥ ४ ॥

पद १७ ठुमरी.

मन लागा जिनजी मन लागा रे । मन लागा ॥ टे० ॥
मनवी लागा तनवी लागा । वचन लगत दुखभगा ॥ १ ॥
और देव तुमसम नहि सोहे । हंसमाहि ज्यों कगा ॥ २ ॥
मै तुमकौ कबहि नहि ध्याये । तातै पाया दगा ॥ ३ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत है । तुमसम और न सगा ॥ ४ ॥

सुंदरमूरत, पद १८ केरवा.

अछितो बलैया तोरी रे । अछितो बलै० ॥ टे० ॥
वीतराग छबि सुंदर मूरत । लागि प्रेमकी डोरी रे ॥ १ ॥
श्रीजिन दरसन परसनसेती । पूरी मनसा मोरी रे ॥ २ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत है । भई कर्मकी होरी रे ॥ ३ ॥

पद १९ राग खुमाची.

मो अरजी चित्त धारो रे । प्रभु पार उतारो ॥ मो० टे० ॥
यो भवसागर उदय भर्‍यो है । क्यौ उतरो जळ भारो रे ॥ १ ॥
इह अवसरमें और न दाता । यह उपगार तुम्हारो रे ॥ २ ॥
लाखबातकी बात कहत है । हिरालालको तारो रे ॥ ३ ॥

भजन, पद २० राग खुमाची.

भजो रे भैया श्रीजिन भावधरी । भजो रे भया ॥ टे० ॥
पैसा न लागे रुपिया न लागे । ना लागे दमरी ॥ १ ॥
ना घर जावे ना दुख आवे । खरचत ना गठरी ॥ २ ॥
जनम जनमका पाप कटैगा । सुमरत एक घरी ॥ ३ ॥
कहत हिराचंद भजन न जाके । सो मुख धूल परी ॥ ४ ॥

पद २१ दादरा.

मनुवा जिनके चरण चित धरना । हो मनुवा जिन० ॥ टे० ॥
झूठी रे माया मोहमृगजलमें । नाहक कायकु मरना ॥ १ ॥
श्रीजिननामका जहाज बनाकर । भवदधि पार उतरना ॥ २ ॥
इनबिन धुंडत तीन जगतमे । और नहीं कहि शरना ॥ ३ ॥
कहत हिराचंद इनपरसादे । जन्ममरण दोउ हरना ॥ ४ ॥

जिनपूजा, पद २२ दादरा झिंजोटी झिल्ल.

जिनपद पूजो सदा सुखकारी । जिनपद पूजो सदा० ॥ टे० ॥
जलगंधाक्षत पुष्प चरु दीप । धूप फल अर्घ उतारी ॥ १ ॥
इकइक द्रव्यसे पूजा करता । पामे स्वर्गपद सारी ॥ २ ॥
मैना सुंदरी श्रीपाल पूजा कर । कुष्टरोग गयो हारी ॥ ३ ॥
दादुर पूजन भाव धरै था । देव भयो अघ टारी ॥ ४ ॥
ग्वालपाल धनदत्त पुष्पसो । नृप करकुंड भयोभारी ॥ ५ ॥
सो पूज्य होसी हिराचंद । मद मत्सर सब छारी ॥ ६ ॥

पद २३ राग काफी.

जिनेंद्र अष्टद्रव्यपूजन.

पूजु पूजु रे जिनेंद नित कारिया । नितकारिया० ॥ टे० ॥
नीर क्षीर दधिको निरमल । भरिके झारिया ।
मोहे पार उतारो । भवसमुद्र वारिया ॥ पूजु० ॥ १ ॥
मलयागिरिचंदन । शीतल वास विस्तारिया ।
संसारताप हरो । नहिं पारिया ॥ पूजु० ॥ २ ॥
मोतीसम अक्षत । पुंज अखंड धारिया ।
अक्षय पद संपत । प्राप्तकरो अचारिया ॥ ३ ॥
फूल रास वास । अलि जापकरे गुंजारिया ।
दुख दाम काम मो । वाण निवारि असारिया ॥ ४ ॥
पकवान अनेक प्रकार । भरिके थारिया ।
इह भूखदुख मम रोग हरो । अति भारिया ॥ ५ ॥
दीप स्वर्णवर्णवत रत्नमई । सुसंसारिया ।
मम मोहकर्म अज्ञान हरो । अंधारिया ॥ ६ ॥
अतिशुद्ध सुगंध दशांग । वन्हिपर जारिया ।
सब कर्म काष्ट मेरे जार । करो प्रभु छारिया ॥ ७ ॥
फल आंब जाम नारिंग । पूंगि मनोहारिया ।
हम मोक्ष सौख्यफल देहु । पाप निवारिया ॥ ८ ॥
जल गंध आदि वसु द्रव्य । अरघ उतारिया ।
निजपद अनर्घ्य द्यो । हिराचंद उधारिया ॥ ९ ॥

पद २४ होरी राग काफी.

चालो जिनधाममें धूम मची । हाजि भवि भावसु खेलिये होरी ॥
सम्यकदरशनका नीर जामे । अनुकंपाकी कटोरी ॥
शील संजम अविर अर्गजा । ज्ञानगुलालकी झोरी ॥ १ ॥
निश्चयरंग चिदानंदकेरा । अनुभवकेशर घोरी ॥
चारितकी पिचकारी भरी है । समता सखीपर छोरी ॥ २ ॥
रागविराग फाग जिन गुणका । तप जप मुरज तंवोरी ॥
याविध होरी हिराचंद खेलो । जनम मरण ना लहोरी ॥ ३ ॥

पद २५ होरी राग काफी.

वीतरागके दरवार होरी हो रहि है । वीतरागके दर० ॥ टे० ॥
दरसन वसन ग्यान उर भूषण । चारित रंग अपार ॥ १ ॥
कुमति कुमार्गकी धूल उडाई । सुमति सखी लिनि लार ॥ २ ॥
जिनजस पुहप अनेक भांतिके । मनअलि करत गुंजार ॥ ३ ॥
दया मिठाई संजम मेवा । सत्य तंवोल उदार ॥ ४ ॥
अष्टकरम इंधनकी होरी रची । ध्यानअग्निकरि छार ॥ ५ ॥
याविधि होरी हिराचंद खेलो । वहुरि न आवे संसार ॥ ६ ॥

पद २६ होरी राग काफी.

रंग मच्यो जिनद्वार रे । चालो खेलिये होरी ॥ रंगमचो० ॥ टे० ॥
करुणा वसंत सखा दशलक्षण । सुमता छविली नार रे ॥ १ ॥
संजमकी पिचकारी वनाई । समकित रंग उदार रे ॥ २ ॥
ज्ञानगुलाल विशाल लिये कर । अशुभकरमपे डार रे ॥ ३ ॥
षोडशकारणकी उर माला । धरम अवीर अपार रे ॥ ४ ॥
वजत मृदंग शुभ उपदेशका । सुधवुध ताल सतार रे ॥ ५ ॥
कहत हिराचंद खेलो फाग यौं । स्वर्गमुक्तिको द्वार रे ॥ ६ ॥

पद २७ राग खुमाची.

सिद्धपरमेष्ठीस्तवन, कर्मक्षयरूप.

सिद्धन थोक वसे सिवलोक । तिन्है पदधोक हमारी है ॥ टे० ॥
लोकसिखरपर आप विराजे । अविनाशी अविकारी है ।
वसुकरम रहित वसुसुगुण सहित । अजरअमरपद धारी है ॥ १॥
मोहनि क्षय सम्यक अर ज्ञाना । वरनी छय ग्यान भारी है ।
दृगवरनीछय दिसे चराचर । अंतराय छय वलभारी है ॥ २ ॥
थिति गये आवागमन न फेरी । नामछय मूर्ति हारी है ।
गोत्रगये गुरुलघु कौन करे । वेदनी छय सुख अपारी है ॥ ३ ॥
कोइक नर दृढ रसिसो वंध्या । कछु छोडत सुखकारी है ।
वाह्याभ्यंतर विधि वंधरहित । क्या कहना सुखभारी है ॥ ४ ॥
कृतकृत्य अरु चर्म शरीरते । किंचित उन आकारी है ।
मोमगयो गलि मुसि अंदरतें । व्योम तदाकृति धारी है ॥ ५ ॥
सोलवानिका ताया कनक ज्यौं । निर्मल अमल अपारी है ।
स्वशक्तिकरि दैदिप्यमान त्यौं । स्वरूप प्रगट करतारी है ॥ ६ ॥
सहजानंद अतेंद्रि निरंजन । जिनवर भिनमत भारी है ।
सिद्धसुमरि निजकाज करे जे । कार्यकी सिद्धि करारी है ॥ ७ ॥
तीन लोकके मंगल करता । जोतमें जोत तुह्मारी है ।
कहत हिराचंद परमाथरतैं । मोको शरण तिहारी है ॥ ८ ॥

भक्ति, पद २८ राग खुमाची.

अकृतिम चैत्यचैत्यालयस्तुति.

त्रिभुवन नित्य चैत्यचैत्यालय । धोक त्रिकाल हमारी है ॥ टे० ॥

सात कोटि वहत्तर लखसंख्या । भुवनालय अधिकारी है ।
मध्यलोकमें चारसे अठावन । धाम अकृतिम धारी है ॥ १ ॥
व्यंतरसुर अर ज्योतिकसुरके । गेह असंख्य अपारी है ।
लखचौरासी सहस सत्यानो । तेइस उरध मझारी है ॥ २ ॥
आठकोटि छप्पन लाख अरु । सत्यानवै हजारी है ।
चारसे इक्यासी सब मिल । जिनमंदिर सुखकारी है ॥ ३ ॥
इकइक घरमें इकसे वसुवसु । प्रतिमा न्यारी न्यारी है ।
पंचवरन मनिमय पद्मासन । धनुष पांचसै सारी है ॥ ४ ॥
आठ अब्ज तेतिस कोटि फुनि । छहत्तरलख पतारी है ।
गुणपचास सहस चारिसे । चौसठ मध्य अगारी है ॥ ५ ॥
कोटि इक्यानो लाख छहत्तर । अठहत्तर हज़ारी है ।
चारसै चौण्यासी उरधमें । व्यंतर ज्योतिक भारी है ॥ ६ ॥
नौ अर्ब पचिस कोट त्रेपनलख । सत्ताइस हजारी है ।
नौसो अडतालिस सब मूर्ती । व्यंतर जोतिकी न्यारी है ॥ ७ ॥
अकृतिम अरु कृतिम जिनके । मंदिर प्रतिमा सारी है ।
कहत हिराचंद नितप्रति वंदौ । भवजल तारण हारी है ॥ ८ ॥

साधुलक्षण, पद २९ राग खुमाची.

कांचन काच बरावर ज्याके । हम वैसेके चाकर है ॥ टे० ॥

शत्रुमित्र सुखदुख सिलसय्या । जीवन मरन समाकर है ।
लाभ अलाभ वढाई निंदा । महल मशान तथाकर है ॥ १ ॥
यथाजात नगन स्वरूप सदा । दोनू हाथ झूलाकर है ।
निर्विकार वालकवत ठाडे । नाशादृष्टि लगाकर है ॥ २ ॥
पिंछि कमंडलु शास्त्रपरिग्रह । तिलतुष और न लाकर है ।
वाहिर मलिन दिसे उरउज्जल । विपयकपाय घटाकर है ॥ ३ ॥
पंच महाव्रत पंचसमितिसो । तिन गुपति रिछाकर है ।
रत्नत्रय दशविध धरम धरे । वार भावना ध्याकर है ॥ ४ ॥
बाइस परिषह सहे निरंतर । द्वादश विध तपस्याकर है ।
अठरा सहस भेद शिलपाले । आतम ध्यान सदाकर है ॥ ५ ॥
ग्रिषमरितु.रवितपे सरसुके । दवसम अचल तपाकर है ।
ताके शृंग शिलापर जोगी । पदजुग धर थिरताकर है ॥ ६ ॥
वर्षाकाल भयानक रयनी । मुसलधार वरपाकर है ।
ऐसे पावसमें तरु नीचे । छिनछिन वुंद सह्याकर है ॥ ७ ॥
सीतपडे जल जमिजाय जहां । वनतरु भसम हुवाकर है ।
ताल नदी दर्यावनके तट । काठ समान रह्याकर है ॥ ८ ॥
श्रावकघर निच उंच न देखे । जाय उडंड रह्याकर है ।
दोषछियालिस टारि मुनीश्वर । भ्रमर अहार गहाकर है ॥ ९ ॥
अठाविस मूलगुण उत्तर गुण । लख चौऱ्यासि निभाकर है ।
कहत हिराचंद वे कब मिलसी । पूरण मो मनसा कर है ॥ १० ॥

जोगि स्वरूप. पद ३० रागखुमाची.

या विध जोगि जोगसु रमते । ताहीके बलहारी है ॥ टेक ॥

पंच महाव्रत कंथा जाके । भुलिन तनसु विसारी है ।
मूल उत्तरगुण पाणी सेती । सुरति करिकरि परवारी है ॥ १ ॥
द्वादश अनुप्रेक्षा सीरजटा । उपसम दंडजु भारी है ।
पंच समिति जंगोटा कसिके । सील कसोठा धारी है ॥ २ ॥
संजमकी झोली शुभखंधे । फेरि पंच घर सारी है ।
दोकर खप्पर आगे मांडे । एपणा समिति अहारी है ॥ ३ ॥
इंद्री दमनकी करि सारंगी । रत्नत्रयजि सतारी है ।
दुविधा धर्मको नादसुनावत । चेतन अलख जगारी है ॥ ४ ॥
करुणाकी माला उरशोभे । परिसह अंगको छारी है ।
राग दोख दुहू कान चिराके । समकित मुद्रा डारी है ॥ ५ ॥
तनु गुफामें वसत निरंतर । ग्यान दीपक उजयारी है ।
तीन गुपति मढि माहिं पैसे । सुमताजोगिन लारी है ॥ ६ ॥
अष्ट करम इंधनकी धूनी । ध्यान अगनिसो जारी है ।
दशलक्षणगुण चक्र फिरावत । आगम दृष्टि निहारी है ॥ ७ ॥
तपगिरवर चढि जगगुरु देखे । सिद्ध निरंजन भारी है ।
जहां देखे तहां और न देखे । परम परापति सारी है ॥ ८ ॥
शुक्लध्यान परिपूरण करके । केवल सिंगि गुंजारी है ।
सुरनर फणि सिप आईतच्छन । गोरख भगति उचारी है ॥ ९ ॥
ऐसो जोग सुगुरु जे साधे । तिनकी गत कछु न्यारी है ।
अमुलिकसुत हिराचंद कहत है । आवागमन निवारी है ॥ १० ॥

धर्म, पद ३१ राग खुमाची.

अथ सोला भावना वरनन प्रारंभ.

कब हम भावहि सोलभावना । तीर्थंकर पद कारी रे ॥ टे० ॥

दर्शन शुद्धि प्रथम शुभ ध्याऊं । दोष पचीस निवारी रे ।
दर्शन ज्ञान चरित्र तपनको । विनय करूं अतिभारी रे ॥ १ ॥
शील अनेक भेदसहित सदा । पालु सकल मल टारी रे ।
ज्ञान पढ औरनकु पढावु । काल अकाल सभारी रे ॥ २ ॥
चिंतउ दृढ वैराग्य सदाउर । भव भोग तनु असारी रे ।
पात्र चतुर्विध देखी अनुपम । दान करूं नित चारी रे ॥ ३ ॥
द्वादशविध तप सेउ निरंतर । यथाशकति अनुसारी रे ।
साधुसंबंधी उपसर्ग आये । दूर करूं ततकारी रे ॥ ४ ॥
दशविध वैयावृत्त्य करूं नित । रोग असाध्य निहारी रे ।
भक्ति करूं अरहंत देवकी । और सकल परिहारी रे ॥ ५ ॥
आचारज बहुश्रुत शास्त्रनकी । भगति करूं न्यारी न्यारी रे ।
छ आवश्यक क्रिया त्रिकालहि । करूं प्रमाद निवारी रे ॥ ६ ॥
जिनशासन करूं मार्ग प्रभावना । पूजा महोत्सव भारी रे ।
साधर्मी वात्सल्य करूं महा । स्नेह अकर्त्रिम धारी रे ॥ ७ ॥
ये विधि प्रभु कब उदै आयगी । वांछा पुरसि हमारी रे ।
कहत हिराचंद जाते हो है । छीयालिस गुण धारी रे ॥ ८ ॥

सम्यक्त्व, पद ३२ भैरवी.

विन सम्यक्त तरे जीव नाहीं । काल अनंत फिरे भवमाहीं ॥ टेक ॥
जिनगुण कीर्तन शास्त्र पठनहि । श्रवणकरे जो नितप्रति च्याही ।
सत्याजिनागम तत्वार्थादिक । सूत्रसिद्धांत वखान कराही ॥ १ ॥
पुनि दशलक्षण धरमपाले । तेरह विधि चारित्र धराही ।
लाखकोटि उपवास करीके । सोखै सकलदेह अधिकाही ॥ २ ॥
जो वनखंडी मुनिवर होकर । ध्यान महान अडोल कराही ।
वरपारितुमें तरुतल बैठी । तपस्या करहि विशेष तहाही ॥ ३ ॥
शीतकाल दरियाव नदीतट । रहके शीत वहोत सहाही ।
ग्रीषमममैं गिरशिखर ऊपर । जाकर जोग सधे थिर थाही ॥ ४ ॥
सामयिक जपतप दान पूजा । वाइस परिषह सहत सदाही ।
इतना किया धरम फल भोगी । फिर त्रस थावरमें भटकाही ॥ ५ ॥
थावर तिय विकलेंद्रि असंज्ञी । म्लेंछनिगोद कुभोग भूमाही ।
व्यंतर जोतिक भुवनालयमें । द्वितीयादिक पट नरक नजाही ॥ ६ ॥
ए वाविस कव जोनि न होहै । सम्यग्दृष्टी जीव जेता ही ।
कहत हिराचंद शास्त्रगम्यते । समकित आतम अनुभव आही ॥ ७ ॥

महिमा, पद ३३ राग दादरा, झिंजोटी झिल्ह.

समकित विन क्रिया रद सारी । समकित विन क्रिया रद सारी ॥
दान पूजा व्रत नेम करे तो । ज्योंहि विलोवत वारी ॥ १ ॥
सोल भावना दृगविन भाई । अंकविना शून्य धारी ॥ २ ॥
शस्त्रविना सुर गडविन गोपुर । कंथ विना ज्यों नारी ॥ ३ ॥
नीम विना घर मूल विन तरुवर । भूप विना ज्यो रारी ॥ ४ ॥
कहत हिराचंद दर्शन शुद्धि । तीर्थंकर पदकारी ॥ ५ ॥

पद ३४ रागदीपचंद.

नवकार मंत्र वा समाधिमरण.

जपो नवकार महा सुखकारी । जासो सुधरे समाधि तुमारी ।।टेक।।
अजिहां दर्शन ग्यान चारित्र तप । आराधना इह चारी ।
अरहंत सिद्ध सुसाधि धरमपुनि । शरण गहो ये चारी ।। १ ।।
अजिहां द्वादश अनुप्रेक्षा उरध्यावो । दशविध धर्म सम्हारी ।
पस्तिस सोलह षट पन चारो । दो एक वरन उचारी ।। २ ।।
अजि० बावीस त्यागी अभक्ष असंजम । सप्त व्यसन परिहारी ।
बार वरत मनसे दढ राखो । अंत सल्लेखना धारी ।। ३ ।।
अजिहां समेदशिखर अर गोमटस्वामी । शत्रुंजो गिरनारी ।
मांगीतुंगी कैलास तारंगो । तीर्थ समरो ये भारी ।। ४ ।।
अजिहां उत्तमक्षमा सबके करके । आशा शल्य निवारी ।
अंतसमयमें वैराग्य संभालो । धर्म सुध्यान विचारी ।। ५ ।।
अजि० पदस्थ पिंडस्थ रूपस्थ रूपातीत । ध्यान ये चार चितारी ।
अमुलिकसुत हिराचंद कहत हैं । सो गत हो जो हमारी ।। ६ ।।

महिमा, पद ३५ ठुमरी.

महामंत्र तु मुखसे बोलरे । ऐसी काई भूलपरी ।। टेक ।।
पांचौं पदके पेतिस अक्षर । यह नवकार सखोलरे ।। १ ।।
जंतर मंतर तंतर आदी । कोई नहीं इस तोलरे ।। २ ।।
खाना पीना सुखसे सोना । वे सब काम निठोलरे ।। ३ ।।
पचास सागरको अघ नासे । इक पद जपत अडोलरे ।। ४ ।।
कहत हिराचंद ये सब साधन उरका कपट दे खोलरे ।। ५ ।।

दुर्लभपणा, पद ३६ चाल होरीकी.

दुर्लभ नर अवताररे देखो । दश दृष्टांतते । दुर्लभ० ॥ टेक ॥
चोलक पाशक धान्य जुत मणि । सुप्रचक्र कर्म युग परमाणु साररे
श्रावकको कुल दुरलभ भाई । अंधेको द्रव्यभंडार रे ॥ २ ॥
जैनधर्म अति मिलवो दुर्लभ । चिंतामणि दधि डाररे ॥ ३ ॥
और कठिन शुभ देश मिलना । ज्ञान विवेक विचाररे ॥ ४ ॥
देह निरोग सुसगत शक्ति । इंद्री सुआयु अपाररे ॥ ५ ॥
सबमे दुर्लभ सम्यक दर्शन । चौपथ रतन वजाररे ॥ ६ ॥
कहत हिराचंद सार्थक करल्यो । यह अवसर मनोहाररे ॥ ७ ॥

धर्म, पद ३७ राग खुमाची.

नरभव पाकर धर्म न कीना । सो भव अफल कहायारे ॥ टेक ॥
ज्यौं सर कमलविना नदी जलविन । जीवविना ज्यौ कायारे ।
वासविना फूल पयविन धेनु । सीलविना ज्यौं जायारे ॥ १ ॥
फलविना वृक्ष पंखविन पंखी । भ्रात किसा विन मायारे ।
गुणविन पुत्र लूणविन भोजन । कंठविना ज्यौं गायारे ॥ २ ॥
मतिविन मंत्री देवविन मंदीर । वृक्ष किसा विन छायारे ।
चंदविना निशि मुनि क्रियाविन । मातकिसी विन मायारे ॥ ३ ॥
धनविन भोग जोगविन जोगि । करविन शस्त्रजु पायारे ।
दृगविन वदन सत्यविन वार्ता । घृतविन अन्नजु खायारे ॥ ४ ॥
दंतविना गज अक्षरविन श्रुत । महिविन ज्यौं घनछायारे ।
गुरुविनग्यान सभाविन पंडित । दयाविन धर्म असुहायारे ॥ ५ ॥
यौं जानी जिन धर्म करो नित । सफल करो निज कायारे ।
अमुलिकसुत हिराचंद कहतहै । पुण्य उदय अब आयारे ॥ ६ ॥

करुणा, पद ३८ दादरा.

जियरा करुणा धरमनित करना । धरम नित करना धरम० ॥ टेक ॥
सबकू वल्लभ जीव सरिखा है । घाटवाद नहि वरना ॥ १ ॥
धर्म दया षटमतमें पुकारे । पाले सो भला उचरना ॥ २ ॥
निजसमजीव ज्यौं वहुवर्णगौ । दुधमें न फेर कछुपरना ॥ ३ ॥
निज कंटक लगे दुख कितनाव्हैं । परपै क्यौ असि धरना ॥ ४ ॥
वृष उत्पन्नकी मात दया है । तातें घातसु डरना ॥ ५ ॥
हिंसा करके धर्म सधै तो । कायकु वृष आचरना ॥ ६ ॥
धीवर पारधी स्वर्गसिधायगे । नर्कंकु किनका विचरना ॥ ७ ॥
जो अहिमुखमें अमृतनिकसे । तो हिंसामें वृष भरना ॥ ८ ॥
अपना कुटुंबकु यज्ञमें झुकाना । परजीव कायकु हरना ॥ ९ ॥
पीडापाप उपकार पुण्य सो । सब श्रुतसार ये वरना ॥ १० ॥
कहत हिराचंद जीवदया कर । तो भवसागर तरना ॥ ११ ॥

यज्ञ, पद ३९ राग खुमाची.

इसविध यज्ञ निरंतर करणा । निज परका हित कारीरे ॥ टेक ॥
चिदानंद यजमान यज्ञका । करणहार अति भारीरे ।
संतोष हि यज्ञकी सामग्री । होम कुंड तन धारीरे ॥ १ ॥
सब परिग्रह होमयोग्य वस्तु । केश दरभही उपारीरे ।
लोचकिजे अर सबजीवदया । सोई दक्षणा प्यारीरे ॥ २ ॥
वहुरि जाके करणेका फल । सिद्ध सुपद वलिहारीरे ।
ऐसा शुकल ध्यानहै सोई । प्राणायाम चितारीरे ॥ ३ ॥
सत्य महाव्रत थंभ यज्ञमें । जिस पशु बंधे यारीरे ।
यह चंचल मन सोई पशू । तपरूप अगनि जारीरे ॥ ४ ॥
पंच इंद्री इंधन कहिये यह । धर्मयज्ञ भव तारीरे ।
कहत हिराचंद यज्ञ पशूके । नर्कनके अधिकारीरे ॥ ५ ॥

जिनधर्म, पद ४० राग दीपंचदी.

करो जिनधर्म सदा हितठानी । निज मनमें समजकर प्राणी ॥
अजि० धरम जिहाज समान महान है । तारक भवदधि पानी ।
धरम करम परवत चूरनको । वज्रगदा समजानी ॥ १ ॥
अजि० सुरग मुगत सुखधाम चढनको । धर्म सोपान कहानी ।
दुरगति नरक द्वार रोकनको । आगळ धर्म वखानी ॥ २ ॥
अजि० धर्म सोही समकित दशलछन । जामें दयाकी खानी ।
अमुलिकसुत हिराचंद कहतहै । पापमिथ्यातकू भानी ॥ ३ ॥

जिनधर्म, पद ४१ राग दीपचंदी.

धरो दृढ धर्म सुआतमग्यानी । शिव सदन भला–
शिवमहल चढनकी निशानी । धरो दृढधर्म सुआ० ॥ टेक ॥
अजिहां त्याग वैराग्य भये दोय दारू । सुंदर रचना ठानी ।
दशविध धरम उदारमहा है । सोई सिवान कहानी ॥ १ ॥
अजिहां इस धर्मनिसेनी चढनको । चाहत मुनिजन ध्यानी ।
ग्याननैनकरि निर्खी चढतजे । सोई वरे सिवरानी ॥ २ ॥
अजि० इंद्र नरेंद्र खगेंद्र भुवनपति । वांछत निशिदिन ग्यानी ।
अमुलिकसुत हिराचंद कहतहै । निश्चय निज उरआनी ॥ ३ ॥

पद ४२.

क्यों घरमाहिं भुल्यो अभागी । क्यों घरमाहिं भुल्यो ॥ टेक ॥
धरम सुदान करनको मुद्यो तू । पाप करमकु फुल्यो ॥ १ ॥
काल अनंत तू इन करनीसें । नरक निगोद रुल्यो ॥ २ ॥
मोह मदिरा पान करीके । कर्म हिंदोले झुल्यो ॥ ३ ॥
कहत हिराचंद नरभव पायो । अब तुम भाग खुल्यो ॥ ४ ॥

पद ४३ राग गज़ल.

दृग ग्यान खोल देख जगमे । कोई ना सगा ।
एक धर्म विना सब असार । हंसमें बगा ॥ टेक ॥
सुत मात तात भाई बंध । घर तिया जगा ।
संसार जलधिमें सदा ये । करत है दगा ॥ १ ॥
धनधान्य दासिदास नाग । चपल तूरगा ।
इंद्रजालके समान सकल । राज नृप खगा ॥ २ ॥
तन रूप आयु जोवन बल । भोग संपदा ।
जैसा डाभअनी बूंद और । नैन ज्यों कगा ॥ ३ ॥
अमुलिकनंद कहत हिराचंद दिल लगा ।
जिनराज जिनागम सुगुरु । चरणपे पगा ॥ ४ ॥

पद ४४.

सुन येक धरमविनारे सुग्यानी । अथिर जग सब जाणिये ॥ टेक ॥
तन धन जोवन इंद्रि विषयसुख । सुपनावत करि मानिये ॥ १ ॥
अनुज तनुज तिय मातपितादिक । विजलीसम ये पिछानिये ॥ २ ॥
हय गय रथ अरु राज संपदा । दमक चमकजुं वखानिये ॥ ३ ॥
नरपति सुरपति खगपति हरिहर । इंद्रधनुप जुं प्रमानिये ॥ ४ ॥
ना कछु थिरता इन आदिक सब । छायासम करि ठानिये ॥ ५ ॥
अमुलिकनंद–हिराचंद कहत है । रत्नत्रय उर आनिये ॥ ६ ॥

पद ४५ पंझाप.

अरे अरे जियरा विरथा क्यों । खोवतहो दिनरातडिया ॥ टेक ॥
वडी घडी घडीयाल वजत है । जम आदेगा लातडिया ॥ १ ॥
दानपूजा तपजप शील संजम । और करो शुभतातडिया ॥ २ ॥
अमुलिकसुत निजहित चाहेतो । सुन सदगुरुकी वातडिया ॥ ३ ॥

सप्तक्षेत्र, पद ४६.

हांजि मोहे यात्रा करनकु जाना । करनकुं जाना कर० ॥ टेक ॥
अष्टापद गिरनार शिखरजी । चंपापुरि पावापुरि ठाना ॥ १ ॥
मांगीतुंगी तारंगो सेत्रुंजो । तीर्थ इत्यादि कहाना ॥ २ ॥
श्रीजिनमंदिर रचिके तामें । जिनविंव पधराना ॥ ३ ॥
पूजा प्रतिष्ठा करूं संघलाई । मुनिकु दान घटाना ॥ ४ ॥
धर्मकथा सुनु दान अभय द्यो । पंच परम पद ध्याना ॥ ५ ॥
परउपगार मार्ग प्रभावना । रथ यात्रादि चलाना ॥ ६ ॥
भाव भयो यो सो प्रभु पुरवो । अमुलिक नंदने गाना ॥ ७ ॥

यात्रा, पद ४७ राग केरवा.

चालो चालो भविक जन आज । शिखरगिरि पूजन वंदनको ॥ टेक ॥
वीस टूकपर वीस जिनेश्वर । मुगत गये महाराज ॥ १ ॥
देश देशके संघजु आवे । पूजत शिवसुख काज ॥ २ ॥
क्षेत्र भरतमें यासम नाही । सब तीरथ शिरताज ॥ ३ ॥
नरक पशु दोनू गत नाशत । अनुक्रम शिवपुरराज ॥ ४ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहे । दरशन द्यो जिनराज ॥ ५ ॥

यात्रा, पद ४८ राग केरवा.

मेरा जनम सफल भयो आज । देख्यागड मांगीतुंगीका ॥ टेक ॥
ज्या परवतपर न्यानु कोडी । मुगति गये मुनिराज ॥ १ ॥
चंद्रनाथ अर पार्श्वप्रभूका । मंदर वन्या शिवकाज ॥ २ ॥
आज सुफल दिन आजसु० घडि । दुष्ट करम गये भाज ॥ ३ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहतहै । आज सरे मेरे काज ॥ ४ ॥

यात्रा, पद ४९ राग झिंजोटी झिल्ह.

भविकजन सवे चलो गिरनारी । भविकजन सवे० ॥ टेक ॥
सोरठदेशमें गिरिवर सोहे । सब जनको हितकारी ॥ १ ॥
कोड वहत्तर सातसे मुनिवर । नेमजि वरी शिवनारी ॥ २ ॥
मनुषजनम निज सुफल करीजे । पूज कर अष्टप्रकारी ॥ ३ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहे प्रभु । द्यो दरशन सुखकारी ॥ ४ ॥

पद ५० राग जंगला.

गोमटस्वामीजी गोमटस्वामीजी । वंदू शिरनामीजी गो० ॥ टेक ॥
अद्भुतमहिमा धारी सुनी है । ध्यावत सुरनर मुनि शिव गामीजी ॥
तुमविना स्वामि वहु दुख देखे । सो तुम जानत अंतर जामीजी ॥
मैं आधिन है विरद तुह्मारे । तुम मेरे साहेब हो अभिरामीजी ॥
अमुलिकनंद निपट आयानी । ल्यो हिराचंदकू शिवपुर ठामिजी ॥

पद ५१ राग केरवा.

देखे देखे महा मुनिराज । गये दुख मो सब भव भवके ॥ टेक ॥
ज्यों रवि ऊगत तम सव नासत । त्यों तुम देखत आज ॥ १ ॥
भाग्य उदय तुम दरसन पायो । धन्य घडी दिन आज ॥ २ ॥
तुम प्रभु स्वामी भवसागरमें । तारण तरण जिहाज ॥ ३ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत है । अजर अमर भयो आज ॥ ४ ॥

पद ५२.

तेरा न कोई सुन तेरा न कोई सुन । भैया वे ते० ॥ टेक ॥
मातपितासुत भाई कुटुंब सव । स्वारथके वे सगैया वे ॥ १ ॥
सुखमें आकार नेह लगाते । कष्टपरे ये भगैया वे ॥ २ ॥
इन मायामें बंध रह्या क्यों । धर्मध्यान विसरैया वे ॥ ३ ॥
अमुलिकसुत यों जानि हिराचद । धर्मकरो चित देया वे ॥ ४ ॥

उपदेश, पद ५३ राग दीपचंदी.

तू तो यह भव निफल गुमायो । फुलवनमें मालतिनें जुजायो ॥ टेक॥
अ० श्रीजिनभक्ति पूजा नहि कीनी । जिनगुण मुखसे न गायो ।
जैनसिद्धांत सुनो नहि कवहू । विधिवत तपना तपायो ॥ १ ॥
अजिहां उत्तम पात्रको दान न दीनो । भावना मनमे न भायो ।
सीलवरत नहि पाल्यो जतनकर । परतिय माहिं लुभायो ॥ २ ॥
अजिहां उत्तम तीरथ साधुकी सेवा । धरममें धन ना लगायो ।
तत्व अतत्व विचार न कीनो । समकित रतन हगायो ॥ ३ ॥
अजि० परिग्रह आरंभ वहुविध करके । अहनिशि पाप कुमायो ।
अमुलिकसुत हिराचंद कहत है । नरक उपाय उपायो ॥ ४ ॥

पाप त्यज, पद ५४ राग दीपचंदी.

तजो जिय आस्रव पापकी खानी । यह नरक भला यह नरक
निगोदके दानी ॥ तजो जिय० ॥ टेक ॥
अजिहां पंच मिथ्यात महा अति दुर्धर । अविरत द्वादश जानी ।
और कपाय पचीस कहाये । इनसे होत वहु हानी ॥ १ ॥
अजि० पंद्रह जोग भये दुखदायक । क्यों न तजो अभिमानी ।
चारित तपकरि द्वार सत्तावन । रोकिये आवत पानी ॥ २ ॥
अजि० जिन इनसेये ते वहु दुखपाये । भये हो नरकके थानी ।
जिन इन त्याग किये ते पलकमें । मुगति लही सुखखानी ॥ ३ ॥
अजि० अमुलिकसुत हिराचंद कहत है । झटपट कुमताकु भानी ।
अव सिखमान समज कछु चेतन । सुमता करो पटरानी ॥ ४ ॥

सप्तव्यसन, पद ५५ राग खुमाची.

देखो भाई इन करनीसे । वहुत जीव दुख पाया रे ॥ टेक ॥
प्रथम व्यसन जूवा रचि पांडव । राजपाट हरवाया रे ।
वनचरसम होके निशिवासर । वनवनमें भटकाया रे ॥ १ ॥
वकराजा मांस भखन सेती । दुर्गतिके दुख पाया रे ।
सुरापान करि छप्पन कोटी । जादव राज जराया रे ॥ २ ॥
सेठ चारुदत्त गणिकासे रत । निजघर द्रव्य हराया रे ।
आकीरति भइ फुनि वेश्याने । तारदखानि झुकाया रे ॥ ३ ॥
ब्रह्मदत्तचक्री पारधीसे । नरकमें जाय वसाया रे ।
शिवभूती ब्राह्मण चोरी करके । फिरिफिरि दंड भराया रे ॥ ४ ॥
तीन खंडको राजा रावण । पररमणीसू लुभाया रे ।
सीताको हर अपजस पायो । पुनि निजप्राण गुमाया रे ॥ ५ ॥
एकएक व्यसनसे इतने दुखपाया । सवका कहां कहाया रे ।
अशुभ छांडि शुभ मारग लागो । हिरालालने गायारे ॥ ६ ॥

अभक्ष त्याग, पद ५६ चाल होरीकी.

वावीस येह अखान रे । तजिये नर ग्यानी ॥ टेक ॥
पीपर वर उवर कठुंवर । पाकरिफल जो अजान रे ॥ १ ॥
कंद मूल पल विष मधु मट्टी । माखन मंदिरापान रे ॥ २ ॥
वैंगण विदल वहूविज ऊरा । निशि भोजन संधान रे ॥ ३ ॥
फल अतितुच्छ तुषार चलित रस । ये द्वय वीस प्रमान रे ॥४॥
कहत हिराचंद ये नहि चाखे । सो श्रावक परधानरे ॥ ५ ॥

पटकर्म, पद ५७ गज्जल.

षटकर्म श्रावके नित्यनित्य आचरो । ज्याते भवसमुद्र वीच,
फेरफेर ना परो ॥ षटकर्म श्रावके नित्यनित्य आचरो ॥ टेक ॥
तीनकाल वीतरागदेवकी पुजा करो । फुनि सद्गुरुकी सेव,
भावभक्ति आदरो ॥ षटकर्म श्रावके नितनित आचरो ॥ १ ॥
स्वाध्याय नित्य पंच भेदसु करो खरो । और संजम सात,
भात चित धरो ॥ पट्कर्म श्रावकके नितनित आचरो ॥ २ ॥
जल चुल्हि चक्कि उखल बुहारी स्त्रीकुं अघवुरो ।
पष्टम द्रव्य उपार्जन्य, भार पुरुष सिर पुरो ॥ षटकर्म० ॥ ३ ॥
अमुलिकनंद कहत हिराचंद व्येवरो । यह षटदोष,
पट पुण्यकर्मते हरो ॥ षटकर्म श्रावकके नितनित आचरो ॥ ४ ॥

नितनेम, पद ५८ राग भैरवी.

सत्रहनेम करो नित प्राणि । श्रावकको आचारसुजानी ॥ टेक ॥
भोजन षटरस मुकता माफिक । सचितवस्त राखिते खानी ।
घरमंदीर रहनेकी गिनती । रण संग्रामनकी हद ठानी ॥ १ ॥
दिशागमनकी अवधी करनी । औषधआदि विलेपन आनी ।
तांवुल लोंग एलचि सुपारी । पुष्प सुगंध सुंघन उन्मानी ॥ २ ॥
नाच ख्याल देखन मरज्यादा । गीतनाद सुनना फुनि कानी ।
स्नान करन राखे तो करना । ब्रह्मचर्य सख्या ठहरानी ॥ ३ ॥
आभूषण पेहरनकी प्रतिज्ञा । वस्त्र वाहन नइ या पुरानी ।
चौकी पाठ तकियादि विछोना । पिवनेका दवादिक पानी ॥ ४ ॥
वाहनआदि सतर यह सव । निशि सामयिक पीछे यादी लानी ॥
इह भव सुख हिराचंद लहसी । अनुक्रम हो है केवल ग्यानी ॥ ५ ॥

शोक, पद ५९ चाल होरी.

कायकु रोत पुकाररे । कछु पाछु न आवे ॥
शोकते परभव शोक उदय व्है । जौं वीज त्यों फल डाररे ॥
एकवेर सवको मरना है । जे है संसार मझाररे ॥
ये मरत मरसी मिति होते । सवका एक प्रकाररे ॥
पर मरता रोवे तो स्व मरता । रोवहि रोवे अपाररे ॥
जो उपजेगा निश्चै मरेगा । उदय अस्त रविलाररे ॥
औरकी मृत्यु गिने मूढप्राणी । स्वमरण न लखे याररे ॥
जो नौकारूढ नर चाले पै । न लखे स्वगमन लगाररे ॥
जस वृष सुख कछु लाभ होय तो । रोवो सह्यार सह्याररे ॥
इन चउमे न एक तो । क्यो रोवत वारंवाररे ॥
तातै शोक न कीजे हिराचंद । अनुप्रेक्षा चितधाररे ॥

पद ६० राग गजल.

च्याकरडि तुमप्यारि लागे जैसी साकरडीरे सैंया जैसि साकरडी ।
आप तो सव देवके सिरपर । जैसी पाघरडी । [॥ टेक ॥
वीतराग शांत छवि । नवल नागरडीरे सैंया० ॥ १ ॥
आज तो आपके दरस सेति । हरखि आंतरडी ।
सो क्छु कहता न आवे । मनकी वातरडीरे सैंया० ॥ २ ॥
अवै तो मैं कव कुदेवन सेऊं । विषकी काकरडी ।
तिनसो कछु हित न हो है । फूटि घागरडीरे सैंया० ॥ ३ ॥
करम मेरे लार लागे । हातमे लेके लाकरडी ।
तातै हिराचंदकु दीजे । मुक्ति ठाकरडीरे सैंया० ॥ ४ ॥

इंद्रिय, पद ६१ केरवा.

वसिकर इंद्रियभोगभुजंग । इंद्रियभोग भुजंग० ॥ ॥ टेक ॥
कागद हथनी लखि स्पर्शनते । बंधि पडत मत्तंग ॥ १ ॥
रसनाके रस मछलि गलीके । खैंचत मरत उमंग ॥ २ ॥
कमल परीमल नाशारत व्है । प्राग गमावत भृंग ॥ ३ ॥
नयन अक्ष मोहे झपलावे । दीपक देखि पतंग ॥ ४ ॥
करणेंद्रियवस घंटारवते । पारधि हनत्त कुरंग ॥ ५ ॥
इक इक विषय करी ऐसा तो । क्या कहु पणका रंग ॥ ६ ॥
खाजि खुजावत हसि फिर रोवे । त्यों इनका परसंग ॥ ७ ॥
कहत हिराचंद इन जीतेसो । पावे सौख्य अभंग ॥ ८ ॥

मन, पद ६२.

मन मरकटकु अचल कर भाई । मन मरकटकु० ॥ टेक ॥
छिनमें मलिनता छिनमें प्रविणता । उलट पलट नटनाई ॥ १ ॥
अरहट घट जौं ध्वज पट भौंरा । चक्र समान भरमाई ॥ २ ॥
मनसा चंचल और न दूजा । सहस कोस चल जाई ॥ ३ ॥
कपट झपटि रहे तनसे लपटि रहे । जाय कहासे कहाई ॥ ४ ॥
विषयभोगमें लीन रहे है । जप तप माहि घवराई ॥ ५ ॥
ज्ञान कलामें निपट अज्ञानी । अघ बातमें बहुचतुराई ॥ ६ ॥
तंदुल मीन सो मनसा अघते । पावत नरक कमाई ॥ ७ ॥

पद ६३ केरवा.

जिया कांई सूवोरे दिन रातडिया । दिन रातडिया दिनरा० ॥टेक॥
इह वह मूवा जै मतुर वजत है । क्यों न डरत निज घातडिया ॥१॥
जप तप संजम दान पूजा व्रत । और करो निज तातडिया ॥ २ ॥
जो निज हितकछु चाहै हिराचंद । सो सुन सद्गुरुकी बातडिया ॥३॥

तन, पद ६४ राग झिंजोटी झिल्ह.

इस तनपरि करो मत यारी । इस तनपरि करो मत यारी ॥ टे० ॥
हाड माल नसा जाल रुधिर । पल चर्मनसु मढि सारी ॥ १ ॥
रोम रेत मिल सात धात यह । अशुचि अपावन सारी ॥ २ ॥
मातपिताके विरजसु उपजे । प्रकृति घिनावन हारी ॥ ३ ॥
रोग क्लेशको धाम एही है । मलमूत्रनकी भंडारी ॥ ४ ॥
सुष्ट वस्तु लेपत अर भुंजत । मलीन होत ततकारी ॥ ५ ॥
लोह अगनिसंगतघनताडन । त्यों इनसो दुख भारी ॥ ६ ॥
कहत हिराचंद ऐसे जानिके । इनको ममत निवारी ॥ ७ ॥

शील, पद ६५ राग झिंजोटी झिल्ह.

शीलव्रत धरो सदा नरनारी । शीलव्रत धरो सदा० ॥ टेक ॥
शीले सीता रामकी रानी । अग्नि कुंड भयो वारी ॥ १ ॥
सेठ सुदर्शन शीलप्रभावे । सिंहासन भयो सुलहारी ॥ २ ॥
द्रौपदि अनंतमति अंजनादि । विघन गयो भयकारी ॥ ३ ॥
शील तजी अमृता अभयमति । कुलको लगाई गारी ॥ ४ ॥
साहसगति रावण अभिलाषे । मरिगये नरक मझारी ॥ ५ ॥
शीलतनी नववाडि हिराचंद । सुरग मुगतिकी वारी ॥ ६ ॥

शील, पद ६६ राग झिंजोटी झिल्ह.

बुधजन तजो सदा परनारी । बुधजन तजो सदा० ॥ टेक ॥
परनारीसे रावण राजा । निज संपत सब हारी ॥ १ ॥
धवलश्रेष्टि परस्त्री मनसाते । गयो नरक मझ्यारी ॥ २ ॥
और बहुत जिय इन संगतते । दुरगतिके हुये धारी ॥ ३ ॥
परवधु सेवन पाप महा है । नरक गमनकी वारी ॥ ४ ॥
कहे हिराचंद इन त्यागनते । मुगिति वरो तिय प्यारी, ॥ ५ ॥

उपदेश, पद ६७ राग काफी.

तू मत कर मेरा मेरा । कोई नही जगमें तेरा ॥ तूमत० टेक ॥
जननि जनक तिय भगिनि कनक धिय । नही भरोसा इनकेरा ॥ १ ॥
किसकी संपति किसकी संतति । किसका इह घर डेरा ॥ २ ॥
राज काज हय गय रथ शिविका । विनसत न लगे वेरा ॥ ३ ॥
मील रहे जियतन खीरनीर जौं । तौ भि नसत तन तेरा ॥ ४ ॥
बाह्य वस्तुकी कौन कथा है । पुत्र त्रियादि घनेरा ॥ ५ ॥
पांच दिवसको मेलोरे भाई । अंत मशान वसेरा ॥ ६ ॥
मित्र रहत अंवुज ज्यौं जलमें । त्यौं सवते तू अनेरा ॥ ७ ॥
अमुलिकनंद हिराचंद कहत है । भज अरिहंत भलेरा ॥ ८ ॥

संतोष, पद ६८ राग केरवा.

सुखिया न दीसे कोई कोई । या जगमाहीं ॥ सुखि० ॥ टेक ॥
कैइक कामिनि कारण झूरत । कैइकके सुत नाहीं ॥ १ ॥
किसहीके तिय कलहि कुरूपी । सुंदर तो हठ ग्राही ॥ २ ॥
कैइक ग्राम म्लेंछ स्थल उपजे । सुकृतहीन पछताही ॥ ३ ॥
केइ निधन अरु रोगपीडित तनु । तातै दुखि अधिकाई ॥ ४ ॥
कैइक पुत्र कलत्र वियोगे । सोचित व्है विललाही ॥ ५ ॥
कहत हिराचंद सुखी संतोषी । और दुखी सब आही ॥ ६ ॥

यम, पद ६९ गज्जल.

जमके वदनके वीज क्या करतरे । मजा मजा जमके० ॥ टेक ॥
निर्दयी वडेरा वनमाहि जौं वघेरा । छिनमें हने अजाअजा ॥ १ ॥
तीर्थंकरराजा इन जीतनके काजा । संसारको तजा तजा ॥ २ ॥
अमुलिकसुत भाखे जिनविन कोई न राखे । राजा अरु प्रजा ॥ ३ ॥

पापपुण्य, पद ७० राग विहाडो.

ये तो फल पापपुन्यके भाई । पाप पुन्यके भाई ये तो ॥ टेक ॥
एकनके घर मंगल गावे । एकनके घर रोवे ।
एकनको थल रहनन पावे । एक महलमे सोवे ॥ १ ॥
कोई एकके घर मालखजाना । कोई एकके नहि दाना ।
कोईइक परघर काम कराना । कोईइक भूप कहाना ॥ २ ॥
एक सदा सुख भुंजत भारी । एकनको नहि नारी ।
एक फिरे जगमाहिं भिकारी । एकनको धन भारी ॥ ३ ॥
एकका रूप सुभग निरोगी । एकनका तन रोगी ।
एक सदा नर सबसे वियोगी । एका सदा सुसंयोगी ॥ ४ ॥
पाप पुण्यफल एह कहावे । कवि परतच्छ बतावे ।
असुलिकसुत हिराचंद गावे । अनुभव मनमे लावे ॥ ५ ॥

संसार, पद ७१ दादरा.

संसार सारा झूटारे । देखो प्यारे ॥ संसार सारा० ॥ टेक ॥
खसखस फूलसम । उपरलाली लाल है ।
नीचे मरणकामूल । कालकूटारे ॥ १ ॥
उसको बूंद रयनकोरे सुपनो ।
डालूसे पान जैसा टूटारे ॥ २ ॥
किनकीरे लडकी । किनका रे लडका ।
पानीका घडा जेसा फूटारे ॥ ३ ॥
किनकी लुगाई माई । किनकारे भाई ।
किनका कुटुंब आयु खूटारे ॥ ४ ॥
कहत हिराचंद । इन मति सेवो ।
धरमभंडार जासी लूटारे ॥ ५ ॥

संसार, पद ७२ चाल होरी.

धिग धिग यह संसाररे। कछु सार न दीसे॥ धिग धिग०॥ टे०॥
कदली थंबविच सारन निकसे। त्यौं इस जगत मझाररे॥ १॥
कनक कामिनीसे जग मोह्यो। होय अग्यान गवाररे॥ २॥
जाके कारण इतना करिये। सो तो नावे लाररे॥ ३॥
जाते चहुगति माहिं भ्रमण व्है। चक्र जैसा कुंभाररे॥ ४॥
यासो दुःख घडियाल संगज्यो। झल्लरि पावत माररे॥ ५॥
अति परिचय तिस होत निरादर। इसमें अदरना लगाररे॥६॥
सेवन करत वहुत प्रिय लागे। परभव कठिण अपाररे॥ ७॥
जौ रिण करत चित हरखत व्है। देवत रोवत फाररे॥ ८॥
यामें सारथा तो क्यो तजते। तीर्थंकरादि उदाररे॥ ९॥
कहत हिराचंद जिन इन त्यागो। सो उतरे भव पाररे॥ १०॥

जोगी, पद ७३ ठुमरी.

मै जोगी होके जाऊंरे जाऊरे। ऐसी मेरी भावना मैं०॥ टे०॥
कव मैं रागादिक परनति तज। मैं सुमतासे लोलाऊरे॥ १॥
मनवचतन तिन जोग करी थिर। मैं आतम ध्यान लगाउरे॥२॥
होय क्षपक श्रेणीपर आरुढ। मैं चारित मोह नसाउंरे॥ ३॥
घाति करमको घात करीकै। मैं केवलग्यान उपाउंरे॥ ४॥
शेप करमको जलांजलि दे। मै शिवपुरवास वसाउंरे॥ ५॥
कहत हिराचंद इस संपतिते। फेरन भवमें आउंरे॥ ६॥

पद, ७४ केरवा.

शिवपुरमै कैसे विधि जाउ। वीचै भवदधि पानीजी॥ टे०॥
मोहनदी तृष्णाजल जामें। चउगति भ्रमर डराउजी॥ १॥
विपय कपाय मगरमच्छादिक। जन्मजरामृत वाउजी॥ २॥
रागद्वेप वडवानल दुस्तर। कर्म तरंग वहाउजी॥ ३॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहे। तुमविन और न नाउजी॥ ४॥

विनंति, पद ७५ चाल होरी.

म्हाने तारो म्हारी वीनतडी । अवधारो ॥ ह्माने तारो० ।
घोराघोर अनादि कालको । यह संसार असारो ॥ टेक ॥
फिरत चतुर गति भीतर दुरधर । कष्ट अनेक प्रकारो ।
नाथ मोहे नैन निहारो । ह्मारी वीनतडी अवधारो ॥ १ ॥
लाख चौन्यासी ज्योनी माहीं । भटको न्यारो न्यारो ।
नानारूप धरो निशिवासर । जामन मरण हजारो ॥ २ ॥
इकसे साडि नन्यानु लाखसय । कुलकोडी अधिकारो ।
थावर जंगम जीवन माहिं । दुःखनको भंडारो ॥ ३ ॥
पंच परावर्तन अतिकीने । जाको वहु विसतारो ।
काल अनंतानंत गुमाये । तौभि न पायो पारो ॥ ४ ॥
मेरी करणीपर मत जईये । मैं अपराधि अपारो ।
तुम करुणाके सागर नागर । ह्मारे भरुसो तुम्हारो ॥ ५ ॥
तुमसम समरथ औरन कोई । लोक अलोक मझारो ।
अमुलिकनंद कछु नहिं जाचे । आवागमन निवारो ॥ ६ ॥

शरण, पद ७६

जिनतो मैं अव शरणांगत आयो । भवदधि पार उतारिये ॥टेक॥
काल सुभट मेरे लार लाग्यो है । याको भव दुख टारिये ॥ १ ॥
तुम प्रभु दीन दया कृपानिधि । मेरी दया उरधारिये ॥ २ ॥
अष्ट करम मोहे वहु संतापे । इनको मूल उखारिये ॥ ३ ॥
अमुलिकनंद हिराचंद कहे । आवागमन निवारिये ॥ ४ ॥

क्रिया त्रेपन, पद ७७ चाल लावणी.

श्रवण क्रिया त्रेपन करिये रे। श्रावकको आचार कह्यो यह।
नितप्रति आचरिये। श्रवण क्रिया त्रेपन करिये रे॥ टेक॥
प्रथम मूलगुण वसुविध मानिरे।पिपर वर उंवर कटुंवरपाकर फलजानी
मद्य मांस मधु मकार तिनीरे। इन वसुनको त्यागकिजे अघखानी॥
त्रस जीवनको घात न कीजे। पर पीडा कुवचन न वदीजे॥
परधन परतिय न गहीजे। परिग्रह दशधा सीम करीयेरे॥ १॥
नित्य दशदिशि अवधी करणारे।
देश प्रमाण नग्र वन सरितादिक यम व्रत धरना।
अनर्थ दंडना आचरणा रे। सामायक एकांत तिहुकाल यथा आदरना॥
चाल। प्रोपध विधि चौ पर्व धरो। भोगोपभोग नेम वरो।
दान सुपात्रको चारि करो। एवं द्वादश व्रत आदरिये रे॥२॥
तपा अनशन अवमोदरि ये रे।
खानेकी वस्तु संख्या रस परित्यागहि करिये।
विविक्त सयासन रहिये रे,
कायक्लेश मिलि तप यह छहविध अभ्यंतर कहिये॥
चाल। प्रायश्चित्त अरु विनये। वैयावृत्त्यसुस्वाध्याये॥
कायोत्सर्ग रु ध्यानलिये। बाह्यतप यहविध धरिये रे॥३॥
उम्रपण त्रिमकार न भुजोरे,
द्यूत पल सुरा वेश्या अहेडी चोरी परस्त्रिय तजो।
सामाइक पर्व उपवास भजो रे,
सचित्त त्याग दिनकु ब्रह्मव्रत धरि निशभोजन वरजो॥
चाल। त्यागो स्वस्त्री परस्त्री सदा। पापारंभ करो न कदा॥
राखी वस्त्र फक्त जदा। ग्रंथयाविन परिहरिये रे॥ ४॥

अनुमत किनकु ना देनारे,
भुक्तिममय जे बुलाय वा घरजा भोजन लेना ।
कमंडल कोपि पिछि धरनारे,
एक वसन मुक्ति पात्र असन निमित्त पणघर रखना ॥
ये क्षुल्लक येलक्क दुसरो । पिंछि कमंडल कोपि धरो ॥
करपात्र उदड अहार करो । एकादश प्रतिमा उच्चरियेरे ॥ ५ ॥
धरो एक साम्य भाव चोखोरे,
जल गालन अन्न अभय औषध शास्त्रदान पोखो ।
दरशन ज्ञान चरन चित राखोरे,
अनस्तमित निशभुक्त त्यजो ये त्रेपन क्रिया लेखो ॥
मूलगुन वसु प्रतिमा ग्यारा । चौदान व्रतहि तप बारा ॥
त्रेपन फिरि मिलिही सारा। हिराचंद कहे जाते तरियेरे॥६॥

पद ७८ राग खुमाची.

समज देख जिय इन जगमाही । कोई साथी न आवेरे ॥ टे० ॥
सदन जिहांका तिहां रहेगा । धन घरमे रहज्यावेरे ॥
तिया रहेगी घरद्वारनमें । पशु गोठामे रहावेरे ॥ १ ॥
भ्राततात सज्जनजन मिलकर । भूमिमशान लग आवेरे ॥
देह रहेगा सब चितामे । अंत अकेलो जावेरे ॥ २ ॥
आय अकेलो जाय अकेलो । पाप अकेलो कमावेरे ॥
नरकगतीमें जाय अकेलो । दुःख अकेलो पावेरे ॥ ३ ॥
पुन्य उपाकर जात अकेलो । सुरगनके सुख पावेरे ॥
नास करमको करत अकेलो । मुगति अकेलो जावेरे ॥ ४ ॥
तातै तजि अधर्म धर्म करो । हिरालाल एह गावेरे ॥
परलोकनमें जीवके साथी । पापपुन्य दोय जावेरे ॥ ५ ॥

निग्रंथ, पद ७९ राग दीपचंदी.

कबे निरग्रंथ स्वरूप धरूंगा । तप करके भला ।
तप धरके मुगतकु वरूंगा ॥ कबे० ॥ टेक ॥
अजिहां कबग्रहवास आस सबछांडी । कब वनमें विचरूंगा ॥
वाह्य अभ्यतर त्यागि परिग्रह । उभय लिंग सुधरूंगा ॥ १ ॥
अ० होय एकाकि मै परम उदासी । पंचाचार चरूंगा ॥
कबथिर जोग करी पदमासन । इंद्रिय दमन करूंगा ॥ २ ॥
अ० आतम ध्यानसजी दल आपनो । मोह अरीसू लरूंगा ॥
त्यागी उपाधी समाधी लगाकर । परिसह सहन करूंगा ॥ ३ ॥
अ० कबगुणथाने श्रेणिपर चढके । कर्म कलंक हरूंगा ॥
आनंदकंद चिदानंद साहेब । विनसुमरे सुमरूंगा ॥ ४ ॥
अ० ऐसि लब्धि जबपाऊं तब मे । आपे आप तरूंगा ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत हैं । वहुरि ना जगमे परूंगा ॥ ५ ॥

मुनिपद, ८० राग मेघमल्हार.

चौउर वदरिया वरपे ॥ चौउर० ॥ टेक ॥
ज्यौ ज्यौं विजली चमकत दमकत । त्यौ त्यौ यतिपति हरपे ॥१॥
ठाडे गिरिपे तरुतल निहचल । पौन झकोरहि परसे तनपरसे ॥
काली रयणि भयंकर दुरधर । वे तो न डरे डरसे कछु डरसे ॥
ऐसे मुनिकु अमुलिकसुत नित । पाउपरत मन भपसे दिलभरसे ॥

सीता, पद ८१.

तनकभर रघुजीसे जाय कहो । येजी विरे हमारी वात ॥ टेक ॥
जननिंदासे तजि हमते हो । जिनधर्म तजिये नहो नहो ॥ १ ॥
अपने किये हमहि लहेहो । तुम सुखि सकल रहोरहो ॥ २ ॥
अमुलिकनंद कहे सीता हो । भइ मुरछीत अहो अहो ॥ ३ ॥

रामचंद्रमुनि, पद ८२ राग झिंजोटी जिल्ह.

रामचंद्र भयेमुनि अतिभारी ॥ रामचंद्र० ॥ टेक ॥
राजकाज सव सुखसंपतिकौ । तृणसम देकरडारी राम० ॥१॥
पंच महाव्रत पंचसमितिसौ । तीन गुपति उरधारी राम० ॥२॥
द्वादशविध शुभतपकू पालत । दुविध परिग्रह टारी राम० ॥३॥
दश लछन मन धरम धरत हैं । वार भावना प्यारी राम० ॥४॥
रत्नत्रय भंडार भऱ्यो है । सहत परीषह यारी राम० ॥ ५ ॥
अठाविस मुलगुण उत्तरगुण । लख चवऱ्यासि संभारी राम० ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत है । चरण कमल वलहारी राम० ॥

जिनगुण, पद ८३ राग सोरठा.

गावत जिनगुण गंभीर ॥ सुरनर सुखकारी ॥ गावत० ॥ टेक ॥
प्रगट्यो केवलसुग्यान । समवसरण धन आन ॥
रचत भयो तिनहि थान । हरख हिय धारी ॥ १ ॥
सिंघासन मणिविचित्र । प्रातिहार्य सहित चित्र ॥
अंतरिक्ष जिन पवित्र । वैठे अघ हारी ॥ २ ॥
वाणि झरत जिन उदार । सकल अरथ सहितसार ॥
सुनत हरत भव विकार । सवजन हितकारी ॥ ३ ॥
वजत हैं मृदंग चंद । वासरि अर विन उत्तंग ॥
लोक सुनत होत दंग । नाचत नरनारी ॥ ४ ॥
नावत करजोरि भाल । अमुलितसुत हिरालाल ॥
द्यो निज संपति कृपाल । अरज यह हमारी ॥ ५ ॥
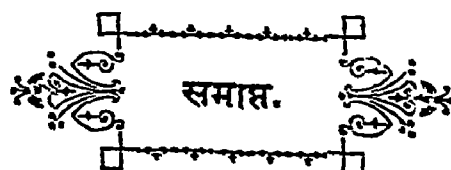
राजुल, पद १ ठुमरी.

अव ना रहे मोहे धीर । अरे अरे अव ना रहे मोहे धीर ।
हमारे पियाकुरे जलदि मिलावोरे । अव ना रहे मोहे धीर ॥टे०॥
जलद मनावोरे हमसे मिलावो । दाझत सकल शरीर ॥ १ ॥
जदुकुलकमल प्रकासन भास्कर । नेमप्रभू धीर वीर ॥ २ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत हैं । राजुल भई दिलगीर ॥ ३ ॥

पद २.

सावरिया मोहे छांडि राज । भला किया तुनेरे । सावरिया०॥टे०॥
मोहेवी छांडि अरछिा लीनी । जादवकुल अजुवाल्या राज ॥ १ ॥
संजम अव मैं जिनका धरूंगी । आतम हीतका करूंगी काज ॥२॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत हैं । नेमप्रभुजी मेरी राखो लाज॥३॥

राजुल, पद ३ होरी राग काफी.

जाउंगि गडगिरनार । सखेरी अपने पियासो खेलुंगी होई ॥टेक॥
समकित केशर अविर अरगजा । ज्ञान गुलाल उदार ॥ १ ॥
सप्त तत्वकी भरि पिचकारी । शीलरूपी जलधार ॥ २ ॥
दशविध धर्मको मादल गुंजत । गुणगण ताल अपार ॥ ३ ॥
अशुभ करमकी होरी वनाई । ध्यान दीयो अंगार ॥ ४ ॥
इनविध होरी खेलत राजुल । पायो सुरग दुवार ॥ ५ ॥
कहत हिराचंद होरी खेलो । आगम महिमा अपार ॥ ६ ॥

पद ४

हमारो वालम यदुराज सखी । वाको जाय कहो समुझायरे ॥ टे०॥
समुद्रविजय शिवादेवीको नंदन । प्यारे नेमिकुवर जिनरायरे ॥१॥
झटपट लाकर मोहे मिलावो । नैतो हमको अवजिय जायरे ॥२॥
अमुलिकसुत हिराचंद कहत हैं । नेमिचरणनपे चित्तलाय ॥ ३ ॥

राजुल, पद ५ राग गजल.

गिरनार गया आज मेरा । नेम दे दगा ।
खावन् विना मैं क्या करूं । दिल श्यामसे लगा ॥ टे० ॥
वलभद्र किसन जादव सव । साथ ले सगा ।
व्याहनकु सजी आये । जिनके लार सुरखगा ॥ १ ॥
पशुका पुकार सुनके । ग्यान दीलमें जगा ।
चले छोड पशू वंध । संजम ध्यानम पगा ॥ २ ॥
अमुलिकनंद कहत हिराचंद । दिल लगा ।
तवै राजमतीनेहि । घरवारको तगा ॥ ३ ॥

पद ६ राग खुमाची.

नेमजी सुरी पुरि वारोरे । सरदार हमारो ॥ टेक ॥
शिवादेवीनंदन सवजगवंदन । समुद्रविजयको दुलारोरे ॥ १ ॥
जदुकुलमंडण कर्मकु खंडन । राजुलको भरतारोरे ॥ २ ॥
अमुलिक सुतनित अरज करत है । आवागमन निवारे ॥ ३ ॥

पद ७ ठुमरी.

सेसावन गये गये रे । हमसे छलवलकर सैया ॥ टेक ॥
व्याहन आये सवजन भाये । पशुवन सुनी पुकाररे ।
सो जानी सो जानी सवकों । छांडि दये दये रे ॥ १ ॥
मोडमुकुट कंकन सव तोडे । तोडे मोतियनके हाररे ।
लै दिछ्या लै दिछया परम । दिगवर भये भयेरे ॥ २ ॥
अमुलिकनंद हिराचंद कहे । धन धन नेमकुमाररे ।
श्रीजादौ श्रीजादौ राजुल । आदिक नयेनयेरे ॥ ३ ॥

राजुल, पद ८ राग सोरठा.

मारु जीमें निरधार निरधार । मंदिर ये क्यौ न चालो ॥ टेक ॥
कबकी ठाडी भई अरज करुछु । आप महादयाके भंडार ॥ १ ॥
तुमविना स्वामी कौन हमारा । नव भव तुम भरतार ॥ २ ॥
धन राजुलसति हिराचंद कहे । दिछ्या लिनि नेमप्रभुलार ॥ ३ ॥

राजुल, पद ९ राग गजल.

तकसीर विना छोड चले । हमसे क्यौं पिया ।
अवे क्या करूं कित जाउ । निकस जात है जिया ॥ टेक ॥
करुणा निधान स्वामि पशु । छुडायके दिया ।
मेरी क्यौ न दया आई । कठिन क्यों भया हिया ॥ १ ॥
तुमतो हमारे नाथआठ । भवकी मैं तिया ।
सोईनेह आज हमसो । कैसा छोडके दिया ॥ २ ॥
कहे नेमि ये संसार सव । असार है तिया ।
ऐसा सुनके हो राजुलने । भूपन डारके दिया ॥ ३ ॥
अमुलिकनंद कहत हिराचंद । सुन जिया ।
नेमिनाथ साथ ज्याके । संजम सार तपलिया ॥ ४ ॥

पद १० राग कलिंगडो.

सावरिया मेरे रुठाय । चाले गिरनारी सावरिया० ॥ टे० ॥
समुद्रविजयसुत नेमनवलजी । सव जनके हितकारी ॥ १ ॥
अष्ट जनमके प्रीतम मेरे । आज चले परभारी ॥ २ ॥
तप करके प्रभु नेम मुगतमें । भविजनकू गये तारी ॥ ३ ॥
अमुलिक सुत हिराचंद कहत है । चरण कमल वलहारी ॥ ४ ॥

मराठी भाषेचीं सुरस पदें.

पद १, राग देवश्रुम.

श्रीजिननाथा शिवपद दाता । मजला तारी रे श्रीजीन०॥टे०॥
जीव जाउनिया नरकास । तेथें बहु दुःखाचा वास ।
छेदन भेदन ताडन त्रास । ऐसा वास घडिला हो ॥ १ ॥
होउनियां तिर्येच असार । परस्वाधीन घेतला भार ।
क्षुधा तृषादि उष्णता फार । दुःख अपार सहिले हो ॥ २ ॥
येउनियां मानव जन्मांत । वेडा झालों हो विषयांत ।
रोगवियोग शोक दिनरात । दु.ख वनांत भ्रमलों हो ॥ ३ ॥
झाले देवगती पदप्राप्त । पाहुनि परसंपति शोकांत ।
कोमिलि पुष्पमाळ कंठांत । दुःख मनांत झाले हो ॥ ४ ॥
ऐसा चतुर्गतीचा फांस । तोडी आलों तुज शरणास ।
देई पंचमगति सुखरास । हीरादास ह्मणितो हो ॥ ५ ॥

पद २.

नको सोडूंरे जिनाचें सदा । नाम नाम नाम नको सो० ॥ टे०॥
निशिदिनि वाचे नाम जयाचे । भवदुख जाती त्याचे लांव लांव ॥१॥
वदनी वदावे भजनी भजावे । न लगे जयासी कांहीं दाम दाम ॥२॥
जिनजिन ऐसे आठवी लइसे । दोनी अक्षराचे सारे काम काम ॥३॥
हिराचंद बोले यासी कोण ताले । होय जिननामे मोक्ष धाम धाम॥४॥

पद ३ प्रभात चाल त्रिलंदी.

भज भज भज भजनि । श्रीजिनराज राज राज राज ॥ टेक ॥
हे तो जीवित क्षणेक । तेहि नाहि शाश्वतेक । घेउनि तो
घेउनि तो । जाईल तुज शीघ्रहि यमराज राजराज ॥ १ ॥
अंतातीत भवजलांत । तारक तुज कोण त्यांत । पडतानें
बुडतानें । भजन पुजनस्तवनहेचि झाज झाजझाज ॥ २ ॥
आतां भज लखतफाट । संसाराचे झट कपाट । नाहि तरी
पाहितरी । चढलमस्तकावरि तुज व्याज व्याजव्याज ॥ ३ ॥
बोले अमुलीकनंद । मंदहिराचंद छंद । मोक्षाचे सौख्याचे
ज्यानें होति । सहज तुजे काज काज काज ॥ ४ ॥

पद ४ चाल विलंदी.

वद वद वद रसनी । श्रीजिननाम नाम नाम वद० ॥ टे० ॥
ज्याला स्मरती नरेश । नाकनाथ नाकेशा नागेशा योगेशा ।
आठवि इत्यादि । अष्ट याम याम याम ॥ १ ॥
नाशे संकट अशेप । चौऱ्यासी लक्षवेप तद्दोषा संक्लेशा ।
जन्ममरणदुःख । धाम धाम धाम ॥ २ ॥
नामे तरले कित्येक । पशुपक्षादि अनेक चक्रेशा कामेशा ।
हेचि आदिकरून । बळी राम राम राम ॥ ३ ॥
सांगे हिराचंद लेश । स्मरिल हृदयीं जो जिनेश तीर्थेशा-
परमेशा याचे सौख्य । त्यास नसे लांब लांब लांब लांब ॥ ४ ॥

पद ५ राग प्रभात चाल विलंदी.

स्मर स्मर स्मर हृदयीं । नाभिनंद नंद नंद ॥ टेक ॥
गेलें भ्रमता अनंतकाळ । जयासि नाहि अंत ।
होउनियां मोहुनियां । संसृति मधि झालि बुद्धि मंद० ॥ १ ॥
मिथ्या शास्त्रादिश्रवण । खोटे देवादि नमन ।
नर्कांचे शोकाचे । जाहुनि तुज होईल दुःखकंद० ॥ २ ॥
लागावा ध्यास सदा । जिनपदारविंद मुदा ।
सोडुनियां मोडुनियां । त्वरित हा प्रपंच सर्व फंद० ॥ ३ ॥
आतां तरी सावध हो । स्मरणाप्रति सन्मुख हो ।
भजनानें स्तवनाचें । होईल तुज मोक्ष सौख्य वृंद० ॥ ४ ॥
ज्याची महिमा अपार । शेषासी न ये पार । सेवक हा
कैसा वर्णु शके अज्ञान । हिराचंद चंद चंद ॥ ५ ॥

पद ६ धन्यासी.

सख्यानू घ्या श्रीजिननामा । महा मंत्रादि अभिरामा ॥ टे० ॥
नसे जिननाम जया वाचे । तोंड ते वारुळ सर्पाचें ।
भजनविन वदनकमल ज्याचें । जसे हो विळ त्या नरकाचें ।
नाम घ्या सर्व त्यजुनि कामा । महामंत्रादि अभिरामा ॥ १ ॥
नामविन मुख ज्या पुरुषाचें । दिसे कुंड जसें चर्मांचें ।
घेईना नाम कदा वाचे । मोरी गारीसममुख त्याचे ।
भजा हो त्यजुनी कुमतिवामा । महामत्रादिअभिरामा ॥ २ ॥
काय सांगू महात्म्य याचें । वदतसे हिराचंद साचें ।
नाम जो घेइ जिनेशाचें । मोक्षसुख तयापुढें नाचे ।
नाम घ्या होईल शिवधामा । महामंत्रादि अभिरामा ॥ ३ ॥

पद ७.

मनमोहन श्रीजिनरायारे । मनमोहन श्रीजिन० ॥ टेक ॥
अंतरिक्ष पद्मासन आसन । राग द्वेष नहि मायारे ॥ १ ॥
वसन भूषणविन सुंदर शोभे । कोटि कामछवि वायारे ॥ २ ॥
रहित विकार शांतरूप पाहतां । आनंद मात न कायारे ॥ ३ ॥
वदत हिराचंद निजपद देई । माथार्पित तव पायारे ॥ ४ ॥

पद ८ राग खुमाची.

कमलदलनयना तारी मला । यदुपति नेमिजिना ॥ कमल० ॥ टेक ॥
करुनि कृपा पशु सोडविले त्वां । माझी का न दयातुला ॥ १ ॥
या भवसागरीं बुडतों दयानिधि । देउनि कर कमला ॥ २ ॥
करितो विनंती निरतर तुजला । का नये करुणा तुला ॥ ३ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद ह्मणतो । करुनि कृपा सवळा ॥ ४ ॥

दान, पद ९ राग देवश्रुम.

करिजे सुपात्रालागि दान । चार प्रकारें हो करिजे ॥ टेक ॥
केल्यानें शास्त्राचें दान । परभवि होउनयां विद्वान ।
नंतर होईल केवलज्ञान । पद निर्वाण त्याप्रति हो ॥ १ ॥
उत्तम देतां दान अहार । होईल भोगभूमि अवतार ।
श्रीतीर्थंकरादि पद सार । सौख्य अपार त्याप्रति हो ॥ २ ॥
देतां औषध दान मनोग । होईल सुंदर देह निरोग ।
नाशति जन्म जरादिरोग । शिव सयोग त्याप्रति हो ॥ ३ ॥
देतां अभंयदान भरपूर । निर्भय होतो तो जिवसूर ।
संकट विघ्न उपद्रव क्रूर । सहजें दूर होती हो ॥ ४ ॥
द्यावें ऐसें परिदानास । श्रावक मुनि श्राविक अर्जिकास ।
आणि अन्नदान दुःखिजनास । हीरादास ह्मणतो हो ॥ ५ ॥

पद १० राग धन्यासी.

चला कैलासाला जाऊं । तीन चोविसी पुजुनि येऊं ॥ टेक ॥
कोस वत्तिसगिरि उन्नतसे । अष्ट सोपान जयासि असे ।
अंग जणुं सम्यक्त्वाचे दिसे । अथवा सिद्धगुण वसुभासे ।
काय दृष्टांत तया देऊं । तीन चोविसी पुजुनि येऊं ॥ १ ॥
आदिजिन अगणित योगीश्वरे । सिद्ध झाले त्यावरति वरे ।
प्रगटले जगांत तीर्थ खरे । मुक्ति वरमाळा घेऊनि फिरे ।
तयाचे सद्गुण किति गाऊं । तीन चोविसी पुजुनि येऊं ॥ २ ॥
धाम वहत्तर कनकाचे करी । मेरु चुळिकासम कळस वरी ।
गोष्टि करि ध्वजा रविसी उपरी । शोभा मानस्तंभादि वरी ।
त्यासि उपमा किति देऊं । तीन चोविसी पुजुनि येऊं ॥ ३ ॥
प्रातिहार्य मंगळ द्रव्य भलें । विंब तीन चोविसिचे धरलें ।
वर्ण उन्नत ज्यापरि झाले । भरत चक्री त्यापरि रचिले ।
त्याचें वर्णन किति गाऊं । तीन चोविसी पुजुनि येऊं ॥ ४ ॥
सिद्धक्षेत्र जाणुन त्या स्थानीं । येती सुरखगचारण सुमुनी ।
वदतसे हिराचंद वदनी । अष्ट विधिनें अर्च्या करुनी ।
मनुष्य जन्माचें फळ घेऊं । तीन चोविसी पुजुनि येऊं ॥ ५ ॥

पद ११ राग रामकळी.

अरे होरे मानवारे अरे होरे० । पाहा या नीतिनें फार झालें ॥टे०॥
दशरथ देई वाक्य कैकैलाही । भरतास राज्यार्पूनी संग्रमासग्राही ।
रामचंद्र वनवासा जाउनया राही । पाहा या नीतिनें फार झालें ॥ १ ॥
विभीषणालागिं राम देइ वचनास । राज्यावर स्थापुनियां लंका पुरी-
त्यास । बळिराय शर्णागत विष्णुमुनिभाष्य ॥ पाहा या नीतिनें० ॥ २ ॥
देवोनिया कंसालागिं वसुदेव भाष्य । देवकिस पाठविली मथुरापुरास ।
वचनानीं पांडुपुत्र गेले वनवास । पाहा या नीतिनें फार० ॥ ३ ॥
डुंबाघरीं पाणि वाहे हरिश्चंद्रराय । यापरि बहुत झालें अन्यथा न होय ।
अमुलिकनद हिराचंद गीत गाय । पाहा या नीतिनें फार झालें ॥ ४ ॥

कर्म, पद १२ राग धन्यासी.

पहा वलिवान कर्म मोठें । चुकेना भोगाविन कोठें ॥ टेक ॥
कोटिभट श्रीपाळ शिवगामी । कुष्टरोग विघ्न त्या कर्मीं ।
भरतचक्री पट्खंड स्वामी । हारि भुजवलिसी संग्रामी ।
दैवगति कदापि ना पलटे । चुकेना भोगाविन कोठें ॥ १ ॥
राम तद्भव शिवगामी तो । सितेसाठीं भ्रमला वनितो ।
दशानन त्रिखंडचा पति तो । मृत्यु पावे लक्ष्मण करिंतो ।
कर्म या परिचें वहु खोटें । चुकेना भोगाविन कोठें ॥ २ ॥
सत्यपणी पांडव महावीर । वनाप्रति गेले गंभीर ।
हारिले कौरव शत सूर । अंजना सीतासति धीर ।
तयेसी वनवास न सूटे । चुकेना भोगाविन कोठे ॥ ३ ॥
कृष्ण तीनखंडपति त्याला । जन्मता मंगल गायाला ।
आणि मरणांतिं रुदनाला । कोणि नव्हतें त्या समयाला ।
भोगिल्याविन ना क्षण लोटे । चुकेना भोगाविन कोठें ॥ ४ ॥
श्रेणिक क्षायिक सम्यक्ती । वंधि पडला स्वपुत्र हस्ती ।
वुद्धि गेली पडली भ्रांती । पावला स्वकरें मृत्यु प्रती ।
भोगितां संकट वहु वाटे । चुकेना भोगाविन कोठें ॥ ५ ॥
विधीनें हे आदि करुनी । वहु जीव भ्रमले दुःखवनी ।
नका करूं पापकर्म कोणी । वदतसे हिराचंद वदनीं ।
कर्म वळकट वंध न तूटे । चुकेना भोगाविन कोठे ॥ ६ ॥

पद १३ राग धन्यासी.

करा हो श्रावक व्रत बारा । नका बांधु पातकाचा भारा ॥ टे ॥
अहिंसाव्रत त्रसजीव रक्षी । द्वितीयाणुव्रत सत्य सुभाखी ।
अचौर्यव्रत त्यागी चोरीसी । ब्रह्मचर्य-व्रत धरिशीळासी ।
परिग्रह दशविध प्रमित करा । नका बांधु० ॥ १ ॥
अतां गुण व्रत तीन श्रुतिधरा । दिग्व्रत दशदिशि अवधि करा ।
देशव्रत देश प्रमाण करा । अनर्थ दंड शस्त्रादि हरा ।
पुढें शिक्षाव्रत चार धरा । नका बांधु० ॥ २ ॥
सामायकव्रत त्रिकाल करीजे । प्रोपधोपास उपास कीजे ।
भोगोपभोग प्रमित करिजे । अतिथिसंविभाग दान दिजे ।
अंतसल्लेखनासि सुधरा । नका बांधु० ॥ ३ ॥
पंचाणुव्रत गुणव्रत तीनी । चार शिक्षाव्रत धरि सुमनी ।
असे द्वादशव्रताची जुळणी । वदतसे हिराचंद वदनीं ।
पाळिता होईल सिवदारा । नका बांधु० ॥ ४ ॥

पद १४ राग खुमाची झिल्ल.

समज धर मनुजा कांहीं तरी । नरभव सफलकरी ॥ टेक ॥
नरतनु अवचित सांपडली तुज । अंध धनाचे परी ॥ १ ॥
हा तुज लाभ अलभ्यचि झाला । सार्थक का न करी ॥ २ ॥
परधन परवनिता परनिंदा । दुरित कषाय हरी ॥ ३ ॥
अमुलिकसुत हिराचंद ह्मणतो । जिनजिन नाम स्मरीं ॥ ४ ॥